02.12.18 की मुरली से प्रश्नोत्तरी
"अव्यक्त-बापदादा"

रिवाइज 05.03.84 मधुबन

शान्ति की शक्ति का महत्व

प्रश्न - शान्ति के सागर बाप किससे मिलने आये हैं?
उत्तर - अपने शान्ति के अवतार बच्चों से मिलने आये हैं।

प्रश्न - आज के संसार में सबसे आवश्यक चीज क्या है?
उत्तर - शान्ति। उसी शान्ति के दाता तुम बच्चे हो।

प्रश्न - कितना भी कोई विनाशी धन, विनाशी साधन द्वारा शान्ति लेने चाहें तो भी क्या नहीं मिल सकती?
उत्तर - सच्ची अविनाशी शान्ति मिल नहीं सकती।

प्रश्न - आज का संसार क्या होते भी अविनाशी सदाकाल की शान्ति के भिखारी हैं?
उत्तर - धनवान होते, सुख के साधन होते।

प्रश्न - ऐसे शान्ति की भिखारी आत्माओं को आप कौन-कौन सी आत्मायें अंचली दे सर्व के शान्ति की प्यास, शान्ति की इच्छा पूर्ण करो?
उत्तर - मास्टर शान्ति दाता, शान्ति के भण्डार, शान्ति स्वरूप आत्मायें।

प्रश्न - बापदादा को किन बच्चों को देख रहम आता है?
उत्तर - अशान्त।

प्रश्न - इतना प्रयत्न कर कौन-सी शक्ति से कहाँ से कहाँ पहुँच रहे हैं, क्या-क्या बना रहे हैं?
उत्तर - साइन्स की शक्ति से। दिन को रात भी बना सकते, रात को दिन भी बना सकते लेकिन अपनी आत्मा का स्वधर्म शान्ति, उसको प्राप्त नहीं कर सकते।

प्रश्न - जितना ही शान्ति के पीछे भाग-दौड करते हैं उतना ही क्या होता है?
उत्तर - अल्पकाल की शान्ति के बाद परिणाम अशान्ति ही मिलती है।

प्रश्न - अविनाशी शान्ति सर्व आत्माओं का क्या है?
उत्तर - ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है। लेकिन जन्मसिद्ध अधिकार के पीछे कितनी मेहनत करते हैं।

प्रश्न - सेकण्ड की प्राप्ति है लेकिन सेकण्ड की प्राप्ति के पीछे पूरा परिचय न होने कारण कितने धक्के कैसे खाते हैं?
उत्तर - पुकारते, चिल्लाते, परेशान होते हैं।

प्रश्न - ऐसे शान्ति के पीछे भटकने वाले अपने आत्मिक रूप के भाईयों को क्या करो?
उत्तर - भाई-भाई की दृष्टि दो। इसी दृष्टि से ही उन्हों की सृष्टि बदल जायेगी।

चेकिंग - आप सभी शान्ति के अवतार आत्मायें सदा शान्त स्वरूप स्थिति में रहते हो ना? अशान्ति को सदा के लिए विदाई दे दी है ना! अशान्ति की विदाई सेरीमनी कर ली है या अभी करनी है? जिसने अभी अशान्ति की विदाई सेरीमनी नहीं की है, अभी करनी है, वह यहाँ हैं? उनकी डेट फिक्स कर दें?

प्रश्न - जिसको अभी सेरीमनी करनी है, वह हाथ उठाओ। कभी स्वप्न में भी क्या न आवे?
उत्तर - अशान्ति न आवे।

प्रश्न - स्वप्न भी कैसे हों?
उत्तर - शान्तिमय हों। शान्ति दाता बाप है, शान्ति स्वरूप आप हो। धर्म भी शान्त, कर्म भी शान्त तो अशान्ति कहाँ से आयेगी।

प्रश्न - आप सबका कर्म क्या है?
उत्तर - शान्ति देना।

प्रश्न - अभी भी आप सबके भक्त लोग आरती करते हैं तो क्या कहते हैं?
उत्तर - शान्ति देवा। तो यह किसकी आरती करते हैं? आपकी या सिर्फ बाप की?

प्रश्न - शान्ति देवा बच्चे सदा कौन सी आत्मायें हैं?
उत्तर - सदा शान्ति के महादानी, वरदानी आत्मायें हैं।

प्रश्न - शान्ति की किरणें विश्व में कैसे फैलाने वाले हैं?
उत्तर - मास्टर ज्ञान सूर्य बन फैलाने वाले हैं, यही नशा है ना कि बाप के साथ-साथ हम भी मास्टर ज्ञान सूर्य हैं वा शान्ति की किरणें फैलाने वाले मास्टर सूर्य हैं।

प्रश्न - सेकण्ड में स्वधर्म का परिचय दे स्व स्वरूप में स्थित करा सकते हो ना? अपनी वृत्ति द्वारा, कौन-सी वृत्ति?
उत्तर - इस आत्मा को भी अर्थात् हमारे इस भाई को भी बाप का वर्सा मिल जाए। इस शुभ वृत्ति वा इस शुभ भावना से अनेक आत्माओं को अनुभव करा सकते हो।

प्रश्न - भावना का फल अवश्य मिलता है। आप सबको कौन सी भावना है?
उत्तर - श्रेष्ठ भावना है, स्वार्थ रहित भावना है, रहम की भावना है, कल्याण की भावना है। ऐसी भावना का फल नहीं मिले, यह हो नहीं सकता।

प्रश्न - जब बीज शक्तिशाली है तो फल जरूर मिलता है। सिर्फ इस श्रेष्ठ भावना के बीज को क्या करते रहो?
उत्तर - सदा स्मृति का पानी देते रहो तो समर्थ फल, प्रत्यक्ष फल के रूप में अवश्य प्राप्त होना ही है। क्वेश्चन नहीं, होगा या नहीं होगा।

प्रश्न-सदा समर्थ स्मृति का पानी क्या है?

उत्तर - सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना है तो विश्व शान्ति का प्रत्यक्षफल मिलना ही है। सर्व आत्माओं की जन्म-जन्म की आश बाप के साथ-साथ सभी बच्चे भी पूर्ण कर रहे हो और सर्व की हो जानी है।

प्रश्न - जैसे अभी कौन से आवाज चारों ओर गूँज रहे हैं?
उत्तर - अशान्ति के आवाज। तन-मन-धन-जन सब तरफ से अशान्ति अनुभव कर रहे हैं।

प्रश्न - भय भी क्या अनुभव करा रहा है?
उत्तर - सर्व प्राप्ति के साधनों को भी शान्ति के बजाए अशान्ति का अनुभव करा रहा है।

प्रश्न - आज की आत्मायें किसके वशीभूत हैं?
उत्तर - किसी न किसी भय के वशीभूत हैं।

प्रश्न - खा रहे हैं, चल रहे हैं, कमा रहे हैं, अल्पकाल की मौज भी मना रहे हैं लेकिन किसके साथ?
उत्तर - भय के साथ। ना मालूम कल क्या होगा। तो जहाँ भय का सिंहासन है, जब नेता ही भय की कुर्सी पर बैठे हैं तो प्रजा क्या होगी।

प्रश्न - जितने बड़े नेता उतने अंगरक्षक होंगे। क्यों?
उत्तर - भय है ना। तो भय के सिंहसान पर अल्पकाल की मौज क्या होगी? शान्तिमय वा अशान्तिमय?

प्रश्न - बापदादा ने ऐसे भयभीत बच्चों को सदाकाल की सुखमय, शान्तिमय जीवन देने के लिए क्या किया है?
उत्तर - आप सभी बच्चों को शान्ति के अवतार के रूप में निमित्त बनाया है।

प्रश्न - शान्ति की शक्ति से क्या कर सकते हैं?
उत्तर - बिना खर्चे कहाँ से कहाँ तक पहुँच सकते हो। इस लोक से भी परे। अपने स्वीट होम में कितना सहज पहुँचते हो! मेहनत लगती है?

प्रश्न - शान्ति की शक्ति से क्या बनते हो?
उत्तर - प्रकृतिजीत, मायाजीत कितना सहज बनते हो। किस द्वारा? आत्मिक शक्ति द्वारा।

प्रश्न - जब एटामिक और आत्मिक दोनों शक्तियों का मेल हो जायेगा तो क्या होगा?
उत्तर - आत्मिक शक्ति से एटामिक शक्ति भी सतोप्रधान बुद्धि द्वारा सुख के कार्य में लगेगी तब दोनों शक्तियों के मिलन द्वारा शान्तिमय दुनिया इस भूमि पर प्रत्यक्ष होगी क्योंकि शान्ति, सुखमय स्वर्ग के राज्य में दोनों शक्तियाँ हैं।

प्रश्न - सतोप्रधान बुद्धि अर्थात् क्या?
उत्तर - सदा श्रेष्ठ, सत्य कर्म करने वाली बुद्धि।

प्रश्न - सत अर्थात् क्या?
उत्तर - अविनाशी भी है। हर कर्म अविनाशी बाप, अविनाशी आत्मा इस स्मृति से अविनाशी प्राप्ति वाला होगा इसलिए कहते हैं सत कर्म। तो ऐसे सदा के लिए शान्ति देने वाले, शान्ति के अवतार हो। समझा। अच्छा-

याद-प्यार और नमस्ते

ऐसे सदा सतोप्रधान स्थिति द्वारा, सत कर्म करने वाली आत्मायें, सदा अपने शक्तिशाली भावना द्वारा अनेक आत्माओं को शान्ति का फल देने वाली, सदा मास्टर दाता बन, शान्ति देवा बन शान्ति की किरणें विश्व में फैलाने वाली, ऐसे बाप के विशेष कार्य के सहयोगी आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

लन्दन के नोबल विजेता वैज्ञानिक जोसिफसन बापदादा से मिल रहे हैं

प्रश्न - शान्ति की शक्ति के अनुभव को भी अनुभव करते हो? क्योंकि शान्ति की शक्ति क्या करने वाली है?
उत्तर - सारे विश्व को शान्तिमय बनाने वाली है। आप भी शान्तिप्रिय आत्मा हो ना!

प्रश्न - शान्ति की शक्ति द्वारा साइन्स की शक्ति से भी क्या बन सकते हो?
उत्तर - उसको भी यथार्थ रूप से कार्य में लगाने से विश्व का कल्याण करने के निमित्त बन सकते हो।

प्रश्न - साइन्स की शक्ति भी आवश्यक है लेकिन इसका यथार्थ रूप से प्रयोग कब कर सकते हैं?
उत्तर - सिर्फ सतोप्रधान बुद्धि बनने से। आज सिर्फ इसी नॉलेज की कमी है कि यथार्थ रीति से इसको कार्य में कैसे लगायें।

प्रश्न - यही साइन्स इस नॉलेज के आधार पर क्या करेगी?
उत्तर - नई सृष्टि की स्थापना के निमित्त बनेंगी।

प्रश्न - लेकिन आज वह नॉलेज न होने कारण क्या हो रहा है?
उत्तर - विनाश की ओर बढ़ रहे हैं।

प्रश्न - तो अभी इसी साइन्स की शक्ति को साइलेन्स की शक्ति के आधार से क्या करो?
उत्तर - बहुत ही अच्छे कार्य में लगाने के निमित्त बनो। इसमें भी नोबिल प्राइज लेंगे ना! क्योंकि आवश्यकता इसी कार्य की है।

प्रश्न - तो जब जिस कार्य की आवश्यकता है उसमें निमित्त बनने वाले को सभी कैसी नजर से देखेंगे?
उत्तर - श्रेष्ठ आत्मा की नजऱ से देखेंगे। तो समझा क्या करना है!

प्रश्न - अभी कौन सी रिसर्च करो?
उत्तर - साइन्स और साइलेन्स का कनेक्शन कैसा है और दोनों के कनेक्शन से कितनी सफलता हो सकती है, इसकी रिसर्च करो। रिसर्च की रूचि है ना! अभी यह करना। इतना बड़ा कार्य करना है। ऐसी दुनिया बनायेंगे ना। अच्छा-

यू.के.ग्रुप -
प्रश्न - कौन से बच्चे सदा ही बाप से मिले हुए हैं?

उत्तर - सिकिलधे बच्चे। सदा बाप साथ है, यह अनुभव सदा रहता है ना?

प्रश्न - अगर बाप के साथ से थोड़ा भी किनारा किया तो क्या होगा?
उत्तर - माया की ऑख बड़ी तेज है। वह देख लेती है यह थोड़ा-सा किनारे हुआ है तो अपना बना लेती है, इसलिए किनारे कभी भी नहीं होना। सदा साथ।

प्रश्न - जब बापदादा स्वयं सदा साथ रहने की आफर कर रहे हैं तो क्या करना चाहिए?
उत्तर - साथ लेना चाहिए ना।
ऐसा साथ सारे कल्प में कभी नहीं मिलेगा, जो बाप आकर कहे मेरे साथ रहो।
ऐसा भाग्य सतयुग में भी नहीं होगा।
सतयुग में भी आत्माओं के संग रहेंगे।
सारे कल्प में बाप का साथ कितना समय मिलता है? बहुत थोड़ा समय है ना।

प्रश्न - थोड़े समय में बाप के साथ रहने का इतना बड़ा भाग्य मिले, तो क्या करना चाहिए?
उत्तर - सदा साथ रहना चाहिए ना।

प्रश्न - बापदादा किन बच्चों को देख रहे हैं?
उत्तर - सदा परिपक्व स्थिति में स्थित रहने वाले बच्चों को देख रहे हैं। कितने प्यारे-प्यारे बच्चे बापदादा के सामने हैं। एक-एक बच्चे बहुत लवली हैं।

प्रश्न - बापदादा ने इतने प्यार से सभी को कहाँ-कहाँ से चुनकर इकट्ठा किया है। ऐसे चुने हुए बच्चे सदा ही कैसे होंगे?
उत्तर - पक्के होंगे, कच्चे नहीं हो सकते। अच्छा-

पर्सनल महावाक्य - विशेष पार्टधारी अर्थात् हर क़दम, हर सेकेण्ड सदा अलर्ट, अलबेले नहीं

प्रश्न - सदा अपने को चलते-फिरते, खाते-पीते क्या अनुभव करो?
उत्तर - बेहद वर्ल्ड ड्रामा की स्टेज पर विशेष पार्टधारी आत्मा अनुभव करो?

प्रश्न - जो विशेष पार्टधारी होता है उसको सदा कौन सा अटेन्शन रहता है?
उत्तर - हर समय अपने कर्म अर्थात् पार्ट के ऊपर अटेन्शन रहता है क्योंकि सारे ड्रामा का आधार हीरो पार्टधारी होता है। तो इस सारे ड्रामा का आधार आप हो ना। तो विशेष आत्माओं को वा विशेष पार्टधारियों को सदा इतना ही अटेन्शन रहता है?

प्रश्न - विशेष पार्टधारी कभी भी क्या नहीं होते?
उत्तर - अलबेले नहीं होते, अलर्ट होते हैं।

चेकिंग -
तो कभी अलबेलापन तो नहीं आ जाता?
कर तो रहे हैं, पहुँच ही जायेंगे..... ऐसे तो नहीं सोचते? कर रहे हैं लेकिन किस गति से कर रहे हैं? चल रहे हैं लेकिन किस गति से चल रहे हैं? गति में तो अन्तर होता है ना।

कहाँ पैदल चलने वाला और कहाँ प्लेन में चलने वाला! कहने में तो आयेगा कि पैदल वाला भी चल रहा है और प्लेन वाला भी चल रहा है लेकिन फ़र्क कितना है? तो सिर्फ चल रहे हैं, ब्रह्माकुमार बन गये माना चल रहे हैं लेकिन किस गति से?

प्रश्न - तीव्रगति वाला ही समय पर कहां पहुंचेगा?
उत्तर - मंज़िल पर पहुँचेगा, नहीं तो पीछे रह जायेगा। यहाँ भी प्राप्ति तो होती है लेकिन सूर्यवंशी की होती है या चन्द्रवंशी की होती है, अन्तर तो होता है ना।

प्रश्न - तो सूर्यवंशी में आने के लिए क्या समाप्त करना है?
उत्तर - हर संकल्प, हर बोल से साधारणता समाप्त हो। अगर कोई हीरो एक्टर साधारण एक्ट करे तो सभी उस पर हंसेंगे ना।

प्रश्न - तो सदा कौन सी स्मृति रहे?
उत्तर - कि मैं विशेष पार्टधारी हूँ इसलिये हर कर्म विशेष हो, हर क़दम विशेष हो, हर सेकेण्ड, हर समय, हर संकल्प श्रेष्ठ हो।

प्रश्न - तीव्र पुरुषार्थ किसको कहते हैं?
उत्तर - ऐसे नहीं कि ये तो 5 मिनट साधारण हुआ। पांच मिनट, पांच मिनट नहीं है, संगमयुग के पांच मिनट बहुत महत्व वाले हैं, पांच मिनट पांच साल से भी ज्यादा हैं इसलिए इतना अटेन्शन रहे। इसको कहते हैं तीव्र पुरुषार्थी।

प्रश्न - तीव्र पुरुषार्थियों का स्लोगन कौन-सा है?
उत्तर - अभी नहीं तो कभी नहीं।" तो यह सदा याद रहता है? क्योंकि सदा का राज्य-भाग्य प्राप्त करना चाहते हो तो अटेन्शन भी सदा हो।

प्रश्न - अब थोड़ा समय सदा का अटेन्शन बहुत-काल क्या कराने वाला है?
उत्तर - सदा की प्राप्ति कराने वाला है।

प्रश्न - तो हर समय कौन सी स्मृति रहे और चेकिंग हो?
उत्तर - कि चलते-चलते कभी साधारणता तो नहीं आ जाती?

प्रश्न - जैसे बाप को परम आत्मा कहा जाता है, तो परम है ना। तो जैसे बाप वैसे बच्चे भी हर बात में कैसे हों?
उत्तर - परम यानी श्रेष्ठ हो।

प्रश्न - तो अभी स्वयं का पुरुषार्थ भी कैसा हो?
उत्तर - तीव्र हो और सेवा में भी कम समय, कम मेहनत लगे और सफलता ज्यादा हो। एक अनेकों जितना काम करे। तो ऐसा प्लैन बनाओ।

प्रश्न - पंजाब तो कैसा है?
उत्तर - बहुत पुराना। सेवा के आदि से हो तो आदि स्थान वाले कोई आदि रत्न निकालो।

प्रश्न - वैसे भी पंजाब को क्या कहते हैं?

उत्तर - शेर है ना। तो शेर गजघोर करता है। तो गजघोर अर्थात् बुलन्द आवाज़। अब देखेंगे - क्या करते हैं और कौन करते हैं?

वरदान - अमृतवेले से रात तक याद के विधिपूर्वक हर कर्म करने वाले सिद्धि स्वरूप भव

- अमृतवेले से लेकर रात तक जो भी कर्म करो, याद के विधिपूर्वक करो तो हर कर्म की सिद्धि मिलेगी।
- सबसे बड़े से बड़ी सिद्धि है - प्रत्यक्षफल के रूप में अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होना।
- सदा सुख की लहरों में, खुशी की लहरों में लहराते रहेंगे।
- तो यह प्रत्यक्षफल भी मिलता है और फिर भविष्य फल भी मिलता है।
- इस समय का प्रत्यक्षफल अनेक भविष्य जन्मों के फल से श्रेष्ठ है।
- अभी-अभी किया, अभी-अभी मिला - इसको ही कहते हैं प्रत्यक्षफल।

स्लोगन:- स्वयं को निमित्त समझ हर कर्म करो तो न्यारे और प्यारे रहेंगे, मैं पन आ नहीं सकता।

ओम शान्ति